[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3412

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

संगीत के प्रचार प्रसार में संचार साधनों की भूमिका

डॉ. स्मिता सहस्त्रबुद्धे

संगीत जीवन के ताने–बाने का वह धागा है जिसके बिना जीवन सत् और चित् का अंश होकर भी आनंद रहित रहता है तथा नीरस प्रतीत होता है। संगीत में ऐसी दिव्य शक्ति है कि उसके गीत के अर्थ और शब्दों को समझे बिना भी प्रत्येक व्यक्ति उससे गहरा सम्बन्ध महसूस करता है। "संगीत" एक चित्ताकर्शक विद्या जो मन को आकर्षित करती है। गीत के शब्द न समझ पाने पर भी धुन पसंद आने पर लोग उस गीत को गाते हैं, क्योंकि भारतीय संगीत–कला भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग है एवं भारत के निवासियों की जीवनशैली का प्रमाण हैं।

"संगीत" मानव समाज की कलात्मक उपलब्धियों और सांस्कृतिक परम्पराओं का मूर्तमान प्रतीक है। यह आदिकाल से ही जनजीवन के लिये आत्मिक उल्लास और सुखानुभूतियों की ललित अभिव्यक्ति का मधुरतम माध्यम रहा है।

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत परिवर्तनशीलता एवं विकास का अनुपम उदाहरण रहा है। परिवर्तनों में स्वयं को समाहित करने की इस कला में अद्वितीय शक्ति रही है। इस विकास के क्रम में नवीन प्रयोग हुए परंतु विकास की धारा कहीं टूटी नहीं है, जैसे फल पकता है और उसका बीज उसी के अन्दर रहता है उसी तरह शास्त्रीय संगीत की विभिन्न विधाओं के मूल का भी कभी विच्छेद नहीं हुआ, परन्तु डार्विन के सिद्धान्त "सरवाईवल ऑफ फिटेस" या योग्यतम् की अतिजीवितता के अनुसार परिवर्तन होना समय की माँग है। स्वयं को समष्टि में पचा लेने की शक्ति के आधार पर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत नव विन्यास ग्रहण करता गया।

भारत के इतिहास में कलाओं की दृष्टि से युगांतकारी परिवर्तन होते रहे है। साहित्य, संगीत चित्रकला जैसी संवेदनशील कलाएं युग की समाप्ति तक अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिये विभिन्न विधाओं में बँटती चली गयीं।
आज के इस वैज्ञानिक युग में विज्ञान का प्रभाव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में दृष्टिगोचर हो रहा है। आधुनिकतम वैज्ञानिक उपकरणों के माध्यम से आज हम अपनी इस पारम्परिक सांगीतिक धरोहर को सुरक्षित रख पाने में सफल व सक्षम हो सके हैं।

नवीन आविष्कारों जिनमें संचार अर्थात् तथ्य को फैलाने की शक्ति ने समाज में व्यापक प्रभाव डालकर संगीत क्षेत्र को जन–जन में जीवन का आवश्यक अंग बना दिया। आजकल सुबह से शाम तक व कभी–कभी चौबीस घंटे अनवरत् संगीत की गूंज हमारे कानों में अनेक रूपों में पड़ती रहती है। इस गूंज के हमारे पास बहुत से माध्यम हैं, जैसे–रेडियो, टेप रिकॉर्डर, ग्रामोफोन, टीवी, सिनेमा इत्यादि। कोई भी स्थान हो या कोई भी कार्य हो सब जगह आकाष की धुन्ध की भाँति संगीत का प्रसार होता रहता है। संचार के इन्हीं माध्यमों के द्वारा संगीत का विकास तेजी से हो रहा है ऐसी मेरी मान्यता है।

बदले सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश में संगीत की नई संभावनाएँ सामने आयी हैं। जिस संगीत का जन्म मंत्रोच्चार के साथ वनखण्ड स्थित महर्षि के आश्रमों में हुआ वह मंदिरों फिर राजदरबारों, हवेलियों, रईसों की उमरावों के महलों से निकलकर संगीत शिक्षण संस्थाओं तथा संगीत सम्मेलनों के रूप में सामान्य समाज के बीच प्रतिष्ठित हो गया।

आम श्रोताओं से सीधा सम्बन्ध होने के कारण संगीतज्ञों के लिये गुणवत्ता के साथ लोकप्रियता की दृष्टि से सन्तुलन बनाए रखना भी आवश्यक हो गया। परिवहन तथा संचार सुविधाओं से प्राप्त सहजता एवं गतिशीलता, आकाशवाणी, दूरदर्शन आदि प्रचार–माध्यमों के कारण घराने–विशेष की भौगोलिक अथवा शैलीगत सीमा में विशुद्ध रूप बनाए रखना अव्यावहारिक हो गया। जहाँ जो भी श्रेष्ठ अनुकूल है, उसे आत्मसात् करने की प्रवृत्ति बढ़ी। बाह्य परिवेश की दृष्टि से संगीत सम्मेलनों के आकार–प्रकार में परिवर्तन हुए। कई–कई दिन रात चलने वाले संगीत सम्मेलन का स्थान दो–तीन घंटों संगीत संभाएं ले रही हैं। कलाकार और श्रोता संभवतः समय की आपाधापी का यह परिणाम माना जा सकता है।

एक और तथ्य एक नवीन उपलब्धि आवागमन तथा परिवहन के आदान–प्रदान से कर्नाटक पद्धति के अनेक रागों ने हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति में सम्माननीय स्थान प्राप्त किया है। हंस ध्वनि, वसन्तमुखारी, जैसे अनेक दक्षिणात्य राग उसी

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

नाम से प्रचलित एवं लोकप्रिय हो गये हैं। वैज्ञानिक उपकरणों, माइक्रोफोन, ध्वन्यांकन पद्धति आदि से संगीत की न केवल अनेक परम्परागत मान्यताएं बदली है प्रत्युत् प्रयोगात्मक संगीत (एप्लाइड म्यूजिक) की भी अनेक दिशाएं सामने आयी हैं।

जीवन के अनेक क्षेत्रों में संगीत की विशेषताओं का व्यापक रूप सामने आया है। विज्ञापन संगीत एवं धुनें, पार्श्व–संगीत, फिल्म संगीत, संगीत निर्देशन, संगीत फीचर, संगीत–नाटिका, ऑपेरा, वाद्यवृन्द सहगान, समूहगान, संगीत प्रेक्षागृह तथा ध्वन्यांकन कक्ष (रिकॉर्डिंग स्टूडियो) तथा ध्वन्यांकन प्राविधिक अभियांत्रिकी एवं तकनीक, दूरदर्षन, आकाशवाणी, उच्चानुशीलन आदि के रूप में संगीत की नयी संभावनाएं सामने आ रही हैं। संगीत सुनने सीखने, सुरक्षित रखने की तकनीक में बड़ा सुधार हुआ है, सुविधाएं सुलभ हुई हैं। समाज में संगीत के प्रति व्याप्त संकीर्ण मनोवृत्ति में भी परिवर्तन हुआ और संगीत के प्रति लोगों का रुझान बढ़ने लगा। कहने का आशय यह है कि नवीन तकनीकी कारकों ने समाज में एक क्रान्ति सी ला दी है।

अतः यह कहना अत्युक्ति न होगी कि बीसवीं शताब्दी में भारतीय कलाएँ विशेष रूप से संगीत के लिये एक नवीन क्रांति और जागरण का संदेश लेकर आई। इस शताब्दी में जो अनेकानेक वैज्ञानिक खोज और आविष्कार हुए उनका संगीत के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान है। विभिन्न संचार एवं प्रौद्योगिकी कारक जैसे 1. यंत्रीकरण, 2. मनोरंजन, 3 यातायात, 4. संचार 5. उपग्रह, 6. नवाचार आदि का संगीत की प्रगति में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से महत्व है। आइये संक्षेप में विचार करें।

1. यंत्रीकरण का संगीत में योगदान– यंत्रीकरण के कारण अनेक संगीतोपयोगी यंत्र जैसे ग्रामोफोन, रेडियो, टेलीविजन, टेप रिकॉर्डर, सी.डी., डी.व्ही.डी. प्लेयर, आइपॉट, कम्प्यूटर, मोबाइल फोन आदि का आविष्कार हुआ तथा प्रतिदिन बाजार में ऐसे वैज्ञानिक उपकरण भी उपलब्ध होते जा रहे हैं, जिसे प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छा, सुविधा और पहुँच के अनुरूप प्राप्त कर सकता है, यहाँ तक कि संगीत उपयोगी वाद्य यंत्र जैसे, लहरा–पेटी, तबला, तानपूरा, वीणा, स्वरमंडल, इलेक्ट्रॉनिक गिटार, सिन्थेसाइजर, ऑक्टोपेड आदि भी अनेकों कम्पनियों द्वारा बाजार में प्रतिदिन आते जा रहे हैं और निरन्तर इस क्षेत्र में नवीन यंत्रों का आविष्कार होने से संगीत की प्रगति में निरंतर विस्तार की "आशा किरण" प्रस्फुटित हो रही है।

2. मनोरंजन के साधनों का संगीत के क्षेत्र में योगदान– मनोरंजन के साधनों में ग्रामोफोन, रेडियो, दूरदर्शन, चलचित्र, टेपरिकॉर्डर, सीडी कैसेट आइपॉड आदि आते हैं। इनके विकास में न केवल समाज में मनोरंजन के साधनों का विकास हुआ बल्कि कला के क्षेत्र में भी विशेष रूप से संगीत की उन्नति हुई है। आज नगर हो या ग्राम, पुरूष हो या स्त्री यहाँ तक कि बच्चे से लेकर बुजुर्ग व्यक्ति को भी देष में होने वाले सांगीतिक आयोजन की जानकारी होती है। फिर चाहे वह शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत अथवा फिल्म संगीत हो। यह संचार साधनों की दृष्टि से महती योगदान स्वीकार किया जा सकता है। इसी प्रकार विभिन्न अवसरों पर किसी व्यक्ति संस्था, समूह, सेटेलाइट चैनल्स आदि माध्यमों द्वारा संगीत प्रतियोगिता आयोजित की जाती है। इन आयोजनों का मुख्य उद्देश्य नवोदित कलाकारों को मंच प्रदर्शन का अवसर प्रदान करना तथा वरिष्ठ कलाकारों के ज्ञान एवं कला साधनों को जनसाधारण के मध्य पहुँचाना होता है। इन आयोजनों से जहाँ एक ओर समाज में लोगों को संगीतज्ञों के नाम और उनकी कलापक्ष की जानकारी प्राप्त होती है। वहीं दूसरी ओर इन साधनों ने सभी वर्ग के लोगों के मध्य संगीत का व्यापक प्रसार भी किया है। संगीत के प्रसार में संचार की भूमिका इस आशय से महत्वपूर्ण सिद्ध होती है।

3. यातायात के साधनों का संगीत में योगदान– नवीन आवागमन संचार एवं प्रौद्योगिकी के कारण सामाजिक, सांस्कृतिक क्षेत्र, कला एवं संगीत के क्षेत्र का व्यापक विस्तार हुआ है। जिसके कारण संस्कृति, कला एवं भारतीय संगीत के प्राचीन स्वरूप में अनेकानेक परिवर्तन हुए। आधुनिक समय में मनुष्य पहिये पर इतना अधिक आश्रित है कि यदि स्थानीय यातायात न होता तो व्यक्ति गाँवों और कस्बों से शहर में आकर नवीन सभ्यता और संस्कृति के आधुनिकीकरण और विभिन्न ललित कलाओं जैसे चित्रकला, संगीतकला आदि को जानने– सीखने का अवसर प्राप्त नहीं कर पाता।

इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि गाँव में सभ्यता, संस्कृति और कलाएं नहीं होती परंतु नगरों में हमें इसका विस्तृत रूप देखने को मिलता है। इसका कारण यह है कि भारत के अलग–अलग ग्रामीण क्षेत्रों में जब व्यक्ति शहर में आता है तो अपनी कलाओं को भी साथ ले आता है। यही कारण है कि शहरों में अनेक संगीत संस्थाएं अलग–अलग घराने की संगीत शिक्षा पद्धति तथा अनेक संगीतज्ञ गायक और वादक कलाकार होते हैं। व्यक्ति अपनी पसंद और सुविधा के अनुरूप शास्त्रीय संगीत गायन अथवा वादन आदि की शिक्षा अथवा संगीत कार्यक्रमों का आनंद ले सकता है।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

दूसरी ओर किसी भी संगीत के कार्यक्रमों, संगीत उत्सव सभा और संगीत प्रतियोगिता आदि के लिये केवल कलाकार और प्रतियोगियों का होना ही आवश्यक नहीं होता बल्कि दर्शक श्रोता और सम्बन्धित व्यक्तियों की भी आवश्यकता होती है। अतएव अप्रत्यक्ष रूप से यातायात के साधनों के अभाव में संगीत के समस्त आयोजन कठिन हैं। निजी वाहन, बस, रेलगाड़ी आदि के माध्यम से कोई भी कलाकार और संगीत सुधि अथवा विद्यार्थी अपनी सुविधा और इच्छानुसार एक स्थान से दूसरे स्थन तक आवागमन कर सकता है। वहीं यातायात के साधनों ने विश्व की दूरी को इतना घटा दिया है कि हवाई जहाज से कलाकार की सुबह एक देश में होती है और शाम दूसरे देश में। यही कारण है कि भारत से अनेकों कलाकार अपनी सांगीतिक प्रस्तुतियाँ देने विदेशों में निरंतर आते–जाते हैं और विदेशों से भी अनेकों कलाकार एवं विद्यार्थी भारतीय संगीत को आत्मसात् करने के लिये यहाँ आते हैं। क्या यह संचार का संगीत से सम्बन्ध प्रगाढ़ होने का संकेत नहीं? अवश्य है।

यदि यातायात के पहिये एक दिन के लिये भी रुक जाएं तो आधुनिक समाज का जीवन ही विश्रृंखलित हो जायेगा। फिर संगीत तो जीवन का आवश्यक अंग ही है।

इस तरह संचार के क्षेत्र में निरन्तर तकनीकी एवं अन्य दृष्टि से विकास हो रहा है। वर्तमान दशक में संचार के माध्यम से एक नए दौर में प्रवेश कर चुके हैं। इस दौर को संचार की इलेक्ट्रॉनिक क्रान्ति की संज्ञा से उद्‌बोधित किया जा सकता है।
संगीत के क्षेत्र में संचार के नवीन साधनों की अपनी विशिष्ट उपयोगिता रही है। साथ ही सामाजिक सम्बन्धों तथा सामाजिक अन्तः क्रियाओं के लिये संचार माध्यमों की अपनी उपयोगिता होती है। संचार की नवीन प्रौद्योगिकी ने व्यक्ति के सामाजिक जीवन को गतिषील बना दिया है। इन संचार माध्यम ने न केवल व्यक्ति के विचारों को परिवर्तित किया बल्कि इन साधनों द्वारा अलग–अलग प्रकार का संगीत जैसे– शास्त्रीय संगीत, सिनेमा संगीत, लोक संगीत, विभिन्न वाद्य यंत्रों का प्रयोग आदि का भी अच्छा प्रचार–प्रसार हुआ। जैसे फिल्मों में विभिन्न गीतों के लिये आवश्यकतानुसार सितार, सरोद, वीणा, सुरबहार, बांसुरी, तबला, पखावज, ढ़ोलक, सिन्थेसाइजर, वायलिन, गिटार, संतूर आदि वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता है और जब यह गीत बाजार में आते हैं तो जनसाधारण को इन वाद्ययंत्रों को सुनने का अवसर प्राप्त होता है। इसी प्रकार शास्त्रीय संगीत पर आधारित अनेकों चलचित्र का निर्माण हुआ है।

संचार के इन साधनों ने एक ओर नवोदित कलाकारों, वरिष्ठ कलाकारों, संगीत विद्वानों आदि को अपनी कला प्रदर्शन का अवसर प्रदान किया है, वहीं दूसरी ओर संगीतज्ञों को उनकी कला प्रदर्शन हेतु उचित पारिश्रमिक प्रदान करके आर्थिक रूप से भी आत्मनिर्भर बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस प्रकार संगीत के विकास में संचार के नवीन प्रौद्योगिकी की विशिष्ट भूमिका सिद्ध होती है। इलेक्ट्रॉनिक संचार के दृश्य और श्रव्य साधनों का लाभ न केवल पढ़े–लिखे लोग बल्कि निरक्षर संगीत के प्रेमी भी उठा सकते हैं। इनसे एक समूह में बड़े समूह के साथ तीव्रता से संचार हो सकता है।

एक ओर यदि आकाशवाणी और दूरदर्शन के आविष्कार को नवाचार की संज्ञा दी जा सकती है। वहीं दूसरी ओर भारतीय शास्त्रीय संगीत में गत् 60–70–80 के दशकों में कुछ शैलियाँ नवीन रूप में सामने आई इसका कारण भी संचार प्रौद्योगिकी का विकास है। केवल गुरुमुख से ही प्राप्त होने वाली शिक्षा वर्तमान समय में गुरू के मार्गदर्शन के साथ ही कैसेट, सी.डी., एल.पी., कम्प्यूटर आदि माध्यम से भी उपलब्ध हैं। अनेक विद्यालय, महाविद्यालय, संगीत संस्थाएं भी संगीत शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

अंत में संगीत एवं संचार साधनों के रूप में मेरे विचार में निम्न साधनों की भूमिका प्रमुखता से स्वीकार की जा सकती है।

समाचार पत्र– आधुनिक समय समाचार पत्र संगीत के प्रचार–प्रसार का एक महत्वपूर्ण साधन है। स्थानीय अथवा राष्ट्रीय स्तर पर संगीत जगत से जुड़ी हर सूचना कलाकारों की प्रस्तुती एवं जीवनी समाचार पत्रों द्वारा पाठकों तक बड़ी सरलता से पहुँचती है।
पुस्तक– पुस्तकें भी प्रचार का एक माध्यम है। इन पुस्तकों में बड़े–बड़े संगीतज्ञों के विचार तथा संगीत के प्रायोगिक तथा सैद्धांतिक पक्ष की विस्तृत जानकारी होती है।
पत्रिकाएं– देखा गया है कि प्रत्येक पत्रिका का अपना एक विशिष्ट महत्व है तथा इसमें संगीत सम्बन्धी विभिन्न सामग्री प्रचुर मात्र में उपलब्ध होती है।
पर्चे– यह प्रायः संगीत कार्यक्रम प्रतियोगिता समारोह आदि से सम्बन्धित होते हैं। यह किसी भी समारोह की सफलता में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

स्मारिका– किसी भी कार्यक्रम अथवा समारोह में प्रस्तुति देने वाले कलाकारों की विस्तृत जानकारी तथा समारोह से सम्बन्धित व्यक्ति तथा संस्था का जिसमें विवरण संगीत प्रेमियों का सरलता से उपलब्ध हो जाता है।
इश्तेहार– बड़े–बड़े इष्तेहार के द्वारा प्रचार की विषय वस्तु को नाना ढंग से प्रस्तुत करके लोगों का ध्यान आकर्षित किया जाता है। उदाहरण के लिये बड़े–बड़े कलाकारों, समारोहों एवं सिनेमा से सम्बन्धित इष्तेहार जो कार्यक्रम को सफल बनाने में अत्यधिक होते हैं।
विज्ञापन– विभिन्न विज्ञापनों के द्वारा संगीत के विभिन्न क्षेत्र से सम्बन्धित रोजगार, स्वरोजगार, संगीत की प्रतियोगिता एवं संगीत छात्रवृत्ति आदि से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त होती है। जिसका लाभ उठाकर संगीत के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त की जा सकती है।

इस तरह वर्तमान समय में प्रौद्योगिकी एवं वैज्ञानिक संचार के उपकरणों का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत एवं व्यापक है जिस पर बहुत कम अध्ययन हुआ है, इस विषय पर अध्ययन की पर्याप्त संभावनाएँ निर्धारित हैं। मेरा यह विश्वास है कि तकनीक के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाले हमारे पुरानी पीढ़ी के कुछ गुरू और कलाकार भी इस आधुनिक तकनीक से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हैं और जब यह कलाकार सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ पूर्णरूप से इस परिवर्तन को स्वीकार करेंगे तभी प्रौद्योगिकी संचार और संगीत का का समन्वित रूप निखर कर समाज के सामने आ सकेगा, जिसकी आज के सामाजिक परिवेश में नितान्त आवश्यकता है और तभी विकास के नए–नए क्षेत्र भी खुलेंगे और संगीत अपने उच्च शिखर पर पहुँचेगा।

संदर्भ –

1 *संचार माध्यमों का प्रभाव – ओम प्रकाश सिंह*
2 *आधुनिक समाज मनोविज्ञान– डी.एन. श्रीवास्तव, जगदीश पाण्डे*
3 *भारतीय संगीत शिक्षा और उद्देश्य– डॉ. पूनम दत्ता*
4 *भारतीय संगीत वैज्ञानिक विष्लेशण – डॉ. स्वतंत्र शर्मा*
5 *हमारा आधुनिक संगीत– डॉ. सुशील कुमार चौबे*
6 *हिन्दुस्तानी संगीत परिवर्तनशीलता– डॉ. असित कुमार बैनर्जी*
7 *संगीत की संस्थागत शिक्षण प्रणाली– डॉ. अमरेशचन्द्र चौबे*
8 *संचार माध्यमों का प्रभाव – ओमप्रकाश सिंह*
9 *सूचना प्रौद्योगिकी और समाचार पत्र– रवीन्द्र शुक्ला*
10 *संगीत का समाज शास्त्र– डॉ. सत्यवती शर्मा*